अकादमिक प्रदर्शन के प्रति अभिभावकों एवं अध्यापकों का दृष्टिकोण

शशिकांत गौड़*
अमित कुमार त्रिपाठी**

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य अभिभावकों एवं अध्यापकों की दृष्टि में अच्छे अकादमिक प्रदर्शन की विशेषता एवं खराब अकादमिक प्रदर्शन की कमियों को जानना तथा वे कौन-कौन से संकेतक हैं, जो विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं, जानना है। प्रस्तुत अध्ययन में वाराणसी जनपद (उत्तर प्रदेश) के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों (n=50) एवं उन्हीं विद्यार्थियों के अध्यापकों (n=50) का चयन किया गया। परिणाम से ज्ञात होता है कि अकादमिक संकेतक के रूप में अभिभावकों एवं अध्यापकों ने संयुक्त रूप से शैक्षिक अभिरुचि को महत्वपूर्ण संकेतक के रूप में माना, जिसमें पढ़ाई के प्रति लगाव, जिज्ञासु प्रवृत्ति, विषय की जानकारी, पढ़ाई संबंधित क्रिया-कलाप सम्मिलित हैं। अच्छे अकादमिक प्रदर्शन की विशेषता में अभिभावकों एवं अध्यापकों ने अनुशासन (नियमितता, अनुशासन, समय का महत्व) तथा खराब अकादमिक प्रदर्शन की कमियों में व्यावहारिक अयोग्यता (बुरी संगति, झगड़ालू प्रवृत्ति, दूसरों के प्रति गलत विचार) को सबसे बड़ी कमज़ोरी कहा, जिससे विद्यार्थियों का अकादमिक प्रदर्शन प्रभावित हो रहा है।

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा एक अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा ही एक ऐसा यंत्र है, जिसके माध्यम से सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन किए जा सकते हैं। शिक्षा, व्यक्तित्व का निर्माण, व्यक्ति के चरित्र को उत्कृष्ट और व्यक्ति को संस्कारित बनाती है। समय-समय पर आवश्यकतानुसार शिक्षा

* मनोविज्ञान विभाग, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
** मनोविज्ञान विभाग, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

का अर्थ तथा महत्व बदलता रहा है। प्राचीन काल में शिक्षा का अभिप्राय आत्म-ज्ञान तथा आत्म-प्रकाश के साधन के रूप में लिया जाता था। प्राचीन यूनान में व्यक्ति को राजनैतिक, मानसिक, शारीरिक एवं नैतिक सौंदर्य के लिए शिक्षा दी जाती थी। प्राचीन समय में रोम में शिक्षा का उद्देश्य केवल वीर सैनिक उत्पन्न करना था। आधुनिक समय में, शिक्षा के व्यापक अर्थ में शिक्षा को गतिशील माना गया है तथा शिक्षा को आजीवन चलने वाली प्रक्रिया बताया गया है।

"शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य में अंतर्निहित शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक श्रेष्ठतम को प्रकाश में लाना है।"— महात्मा गाँधी। वैदिक साहित्य में 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया है, यथा 'विद्या', 'ज्ञान','बोध' और 'विनय'। आधुनिक शिक्षाशास्त्रियों के समान प्राचीन भारतीयों ने भी 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग व्यापक और सीमित, दोनों अर्थों में किया है। व्यापक दृष्टि से यदि हम देखें तो शिक्षा का तात्पर्य उन सभी अनुभवों से है, जो बालक विभिन्न परिस्थितियों में अर्जित करता है। इस अर्थ के अनुसार 'शिक्षा' आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। इस प्रकार की शिक्षा प्रक्रिया में नियंत्रित वातावरण का कोई अंकुश नहीं होता है। यदि हम शिक्षा के संकुचित अर्थ की बात करें तो शिक्षा का अभिप्राय विद्यालयी शिक्षा से है, जहाँ नियंत्रित वातावरण में विद्यार्थी को बैठकर उसे पूर्व निर्धारित अनुभवों का ज्ञान कराया जाता है। मुदालियर एवं कोठारी आयोग (1964) ने शिक्षा के उद्देश्य में जनतंत्रात्मक नागरिकता की भावना का विकास, व्यक्तित्व का विकास, नेतृत्व का विकास, राष्ट्रीय भावात्मक एकता, विश्व-बंधुत्व तथा अंतर्राष्ट्रीय भावना, सच्ची देशभक्ति, जीवन के मूल्य तथा दिशा का निर्माण, प्रतिभाओं की खोज और आदर, व्यवसायिकता का मूल्यांकन एवं वैज्ञानिकता को प्रमुखता से बताया (एन.सी.ई.आर.टी., 2008 और एन.सी.टी.ई., 2009)।

माध्यमिक शिक्षा का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। जो बालकों में रुचि, आदत, अभिवृत्ति, बौद्धिक विकास, कार्यकुशलता, सामाजिकता, क्रियाशीलता इत्यादि गुणों का विकास करने में सहायक होती है। देश की आर्थिक उन्नति का दृढ़ आधार माध्यमिक शिक्षा ही होती है, क्योंकि किसी भी व्यवसाय में बालकों का प्रवेश माध्यमिक शिक्षा के बाद ही होता है। माध्यमिक शिक्षा बालकों में रुचि, आदत, अभिवृत्ति, बौद्धिक विकास, कार्यकुशलता, सामाजिकता, क्रियाशीलता इत्यादि गुणों का विकास करनें में सहायक होती है ।

माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा का वह समय है जो मुख्य रूप से लगभग 12 से 17 वर्ष के बीच की आयु में होती है। इसमें शिक्षा का बल सीखने के आधारभूत साधनों, अभिव्यक्ति और अवबोध से हटना शुरू हो जाता है। बल का केंद्र अब इस बात की खोज करने पर होता है कि इन साधनों का उपयोग विचार और जीवन के क्षेत्रों में किस प्रकार किया जा सकता है। किशोर अब सूचनाओं, संप्रत्ययों, बौद्धिक कौशलों, अभिवृत्तियों, सामाजिक, शारीरिक, बौद्धिक आदर्शों, आदतों, अवबोध आदि की खोज करने लगता है और उन्हें अपनाने की कोशिश करता है।

इसमें प्रायः विद्यार्थी की आवश्यकताओं और रुचियों के आधार पर विभेद किया जाता है। यह शिक्षा अपने आप में पूर्ण भी हो सकती है और आगे की शिक्षा के लिए तैयार करने वाली भी हो सकती है। विद्यार्थियों के अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं उनकी उच्च शैक्षिक उपलब्धि उनके माता-पिता के शैक्षिक मामलों या कार्यों की रुचि से जुड़ी हुई है। Hill and Craft, 2003 के अनुसार, अफ्रीकी-अमेरिकी एवं यूरो-अमेरिकी में पठन उपलब्धि एवं अकादमिक कौशल अभिभावक सहभागिता एवं उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। एक तरफ़ अफ्रीकी-अमेरिकी में अकादमिक कौशल विद्यालय सहभागिता एवं गणित के प्रदर्शन में मध्यस्थता करता है, वहीं दूसरी तरफ यूरो-अमेरिकी में सामाजिक समर्थता विद्यालय उपलब्धि पर गृह सहभगिता में मध्यस्थता करता है।

अकादमिक प्रदर्शन के द्वारा ही पता चलता है कि बच्चों के व्यक्तित्व का विकास कितना हुआ है, कैसे हो रहा है तथा उनके व्यक्तित्व विकास को और कैसे बेहतर बनाया जाए। यहाँ पर ध्यान देना होगा कि बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन से सिर्फ़ उनके व्यक्तित्व विकास का ही पता नहीं चलता, बल्कि उनके संज्ञानात्मक और भावात्मक विकास का भी पता चलता है। Stephen and Schaben, 2002 के अनुसार, "जो विद्यार्थी अन्य गतिविधियों में ज़्यादा भाग लेते हैं उनका कक्षा में प्रदर्शन बहुत ही उत्कृष्ट होता है।" अकादमिक प्रदर्शन से तात्पर्य यह भी होता है कि पाठ्यक्रम के अतिरिक्त विद्यार्थी किन-किन गतिविधियों में भाग लेता है, अर्थात् खेल-कूद, वाद-विवाद प्रतियोगिता, कार्टून बनाना, स्केचिंग, नृत्य करना, संगीत, मेंहदी तथा कृषि कार्यों में रुचि लेना इत्यादि। इन सबको पाठ्येत्तर गतिविधि कहा जाता है। यदि बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ पाठ्येत्तर गतिविधियों में भी भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तो उनकी संज्ञानात्मक क्षमता (अधिगम, स्मृति, समस्या-समाधान, बुद्धि-लब्धि, सोचने की क्षमता, तर्कपूर्ण योग्यता) में वृद्धि होती है। पाठ्येत्तर गतिविधियों में भाग लेने से सिर्फ़ उनकी संज्ञानात्मक क्षमता का ही विकास नहीं होता है, बल्कि उसके साथ उनकी भावात्मक और संक्रियात्मक क्षमता का भी विकास परिलक्षित होता है। Kimani, Kara and Njagi (2013) ने केन्या के माध्यमिक विद्यालय के 153 अध्यापकों को लेकर अध्ययन किया और बताया कि लिंग-भेद अकादमिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है।

विधि प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन में वाराणसी जनपद (उत्तर प्रदेश) के तीन सरकारी एवं तीन निजी माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया, जिसमें सरकारी एवं निजी विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अध्यापकों एवं उन विद्यार्थियों के अभिभावकों (n=25) को प्रतिभागी के रूप में सम्मिलित किया गया। प्रतिभागियों का चयन प्रतिदर्श के रूप में साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया जो तालिका संख्या 1 में प्रदर्शित है।

तालिका संख्या 1 – प्रतिदर्श

प्रतिभागी	सरकारी विद्यालय	निजी विद्यालय	योग
विद्यार्थियों के अभिभावक	25	25	50
विद्यार्थियों के अध्यापक	25	25	50
योग	50	50	100

उपकरण

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अच्छे अकादमिक प्रदर्शन की विशेषता, खराब अकादमिक प्रदर्शन की कमी तथा विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले संकेतकों को उनके अभिभावकों एवं अध्यापकों से जानने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण शोधकर्त्ता के द्वारा किया गया।

प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध दो चरणों में किया गया। प्रथम चरण में अध्यापकों से विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन से संबंधित जानकारी लेने के लिए शोधकर्ता ने वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में स्थित माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापक को शोध से संबंधित जानकारी देने एवं अनुमति मिलने के पश्चात् विद्यालय के अध्यापकों से संपर्क किया। अध्यापकों को शोध से संबंधित जानकारी देते हुए उन्हें साक्षात्कार अनुसूची दी तथा उनसे उपयुक्त जानकारी देने को कहा।

द्वितीय चरण में विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन से संबंधित जानकारी अभिभावकों से लेने के लिए उन्हीं अध्यापकों के विद्यार्थियों से संपर्क स्थापित किया तथा उनके घर का पता लेकर विद्यार्थियों के अभिभावकों से मिला गया और उन्हें भी साक्षात्कार अनुसूची देकर उनसे उपयुक्त जानकारी देने को कहा, साथ-ही-साथ उन लोगों को बताया गया कि यह शोध आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के लिए कितना महत्वपूर्ण है और उन्हें इसका लाभ भी बताया गया।

विवेचना

अकादमिक प्रदर्शन के संकेतक — अभिभावकों और अध्यापकों द्वारा दी गई प्रतिक्रिया—

अभिभावकों द्वारा

सरकारी माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के 18 अभिभावकों ने अकादमिक संकेतक के रूप में शैक्षिक अभिरुचि को महत्वपूर्ण बताया। शैक्षिक अभिरुचि के अंतर्गत उन्होंने मुख्य रूप से पढ़ाई के प्रति लगन, शिक्षा के प्रति अभिरुचि, विषय की जानकारी को बताया। इसके पश्चात् 15 अभिभावकों ने उनकी पृष्ठभूमि को, 14 अभिभावकों ने व्यवहार को, 06 अभिभावकों ने अनुशासन को, 01 अभिभावक ने परीक्षाफल को अकादमिक प्रदर्शन के संकेतक के रूप में महत्वपूर्ण माना। इसी प्रकार, शारीरिक क्षमता को 4 अभिभावकों ने, सकारात्मक क्षमता को 04 अभिभावकों ने एवं संज्ञानात्मक क्षमता को 10 अभिभावकों ने महत्वपूर्ण माना।

तालिका संख्या 2 – अकादमिक प्रदर्शन के संकेतक

संकेतक	सरकारी		निजी	
	अभिभावक	*अध्यापक*	*अभिभावक*	*अध्यापक*
शैक्षिक अभिरुचि (पढ़ाई के प्रति लगाव, जिज्ञासु, विषय की जानकारी, पढ़ाई संबंधित क्रियाकलाप)	18	16	24	19
पृष्ठभूमि (पारिवारिक वातावरण, अभिभावक की शिक्षा, सही विद्यालय)	15	17	05	07
व्यवहार (संस्कार, विद्यार्थी एवं शिक्षक के बीच अच्छा सामंजस्य, अच्छी संगति)	14	12	09	07
अनुशासन (नियमितता, अनुशासन, समय का महत्व)	06	07	20	05
परीक्षाफल (अंक-पत्र)	01	08	08	18
शारीरिक क्षमता (मेहनत, कार्य करना, व्यक्तित्व-विकास)	04	08	06	12
सकारात्मक क्षमता (आत्मविश्वास, अध्ययन के प्रति सकारात्मक नज़रिया, शांत स्वभाव)	04	05	01	15
संज्ञानात्मक क्षमता (बुद्धिलब्धि, स्पष्ट विचार)	10	01	01	03

निजी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के 24 अभिभावकों ने शैक्षिक अभिरुचि को अकादमिक संकेतक के रूप में बताया, वहीं 05 अध्यापकों ने विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को, 09 अभिभावकों ने व्यवहार को, 20 अभिभावकों ने अनुशासन को, और 08 अध्यापकों ने परीक्षाफल को अकादमिक प्रदर्शन के संकेतक के रूप में महत्वपूर्ण माना। सकारात्मक क्षमता एवं संज्ञानात्मक क्षमता को सिर्फ़ 01 अभिभावक ने तथा 06 अभिभावकों ने शारीरिक क्षमता को महत्वपूर्ण माना।

अध्यापकों द्वारा

सरकारी माध्यमिक विद्यालय के 16 अध्यापकों ने शैक्षिक अभिरुचि को अकादमिक संकेतक के रूप में महत्वपूर्ण माना। विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को 17 अध्यापकों ने, वहीं व्यवहार को 12 अध्यापकों ने महत्वपूर्ण माना। 07 अध्यापकों ने अनुशासन को एवं 08 अध्यापकों ने परीक्षाफल को महत्वपूर्ण बताया। इसी प्रकार 08 अध्यापकों ने शारीरिक क्षमता को, सकारात्मक क्षमता को 05 अध्यापकों ने जबकि सिर्फ़ 01 अध्यापक ने संज्ञानात्मक क्षमता को अकादमिक संकेतक के रूप में महत्वपूर्ण माना।

निजी माध्यमिक विद्यालय के 19 अध्यापकों ने शैक्षिक अभिरुचि को अकादमिक संकेतक के रूप में महत्वपूर्ण माना। विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि एवं व्यवहार को 07 अध्यापकों ने महत्वपूर्ण माना। 05 अध्यापकों ने अनुशासन को एवं 18 अध्यापकों ने

परीक्षाफल को महत्वपूर्ण बताया। इसी प्रकार 12 अध्यापकों ने शारीरिक क्षमता को, सकारात्मक क्षमता को 15 अध्यापकों ने जबकि सिर्फ़ 03 अध्यापकों ने संज्ञानात्मक क्षमता को अकादमिक संकेतक के रूप में महत्वपूर्ण माना। परिणाम में यह पाया गया कि सिर्फ़ निजी माध्यमिक विद्यालय के 3 अध्यापक मार्गदर्शन को अकादमिक प्रदर्शन के लिए आवश्यक मानते हैं।

अच्छे अकादमिक प्रदर्शन की विशेषता— अभिभावकों और अध्यापकों द्वारा दी गई प्रतिक्रिया—

अभिभावकों द्वारा

सरकारी माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के 24 अभिभावकों ने अच्छे अकादमिक प्रदर्शन के लिए शैक्षिक अभिरुचि को सबसे महत्वपूर्ण बताया। शैक्षिक अभिरुचि के अंतर्गत उन्होंने मुख्य रूप से पढ़ाई के प्रति लगन, शिक्षा के प्रति अभिरुचि, जिज्ञासा को बताया। इसके पश्चात् 04 अभिभावक उनकी पृष्ठभूमि को, 14 अभिभावक व्यवहार को, 12 अनुशासन को, शारीरिक क्षमता को 04, सकारात्मक क्षमता को 11 एवं संज्ञानात्मक क्षमता को 05 एवं मार्गदर्शन को 07 अभिभावकों ने महत्वपूर्ण माना।

निजी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के 18 अभिभावकों ने शैक्षिक अभिरुचि को अच्छे अकादमिक प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण बताया, वहीं 01 अभिभावक ने विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को, व्यवहार को 18 अभिभावकों ने, 25 अभिभावकों ने अनुशासन को, शारीरिक क्षमता को 15, सकारात्मक क्षमता को 09 एवं संज्ञानात्मक क्षमता को 01 अभिभावक ने महत्वपूर्ण माना। इसी प्रकार 05 अभिभावकों ने मार्गदर्शन को अच्छे अकादमिक प्रदर्शन के लिए ज़िम्मेदार माना।

तालिका संख्या 3 – अच्छे अकादमिक प्रदर्शन की विशेषता

संकेतक	सरकारी		निजी	
	अभिभावक	*अध्यापक*	*अभिभावक*	*अध्यापक*
शैक्षिक अभिरुचि (पढ़ाई के प्रति लगाव, जिज्ञासु, विषय की जानकारी, पढ़ाई संबंधित क्रियाकलाप)	24	14	18	15
पृष्ठभूमि (पारिवारिक वातावरण, अभिभावक की शिक्षा, सही विद्यालय)	04	07	01	09
व्यवहार (संस्कार, विद्यार्थी एवं शिक्षक के बीच अच्छा सामंजस्य, अच्छी संगति)	14	14	18	08
अनुशासन (नियमितता, अनुशासन, समय का महत्व)	12	24	25	22
शारीरिक क्षमता (मेहनत, कार्य करना, व्यक्तित्व-विकास)	04	12	15	08

सकारात्मक क्षमता (आत्मविश्वास, अध्ययन के प्रति सकारात्मक नज़रिया, शांत स्वभाव)	11	07	09	01
संज्ञानात्मक क्षमता (बुद्धिलब्धि, स्पष्ट विचार)	05	12	01	07
मार्गदर्शन (माता-पिता एवं गुरु का मार्गदर्शन)	07	01	05	03

अध्यापकों द्वारा

सरकारी माध्यमिक विद्यालय के 14 अध्यापकों ने शैक्षिक अभिरुचि को अच्छे अकादमिक प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण माना। विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को 07 अध्यापकों ने, वहीं व्यवहार को 14 अध्यापकों ने महत्वपूर्ण माना। 24 अध्यापकों ने अनुशासन को महत्वपूर्ण बताया। इसी प्रकार 12 अध्यापकों ने शारीरिक क्षमता को, सकारात्मक क्षमता को 07 अध्यापकों ने, जबकि 12 अध्यापकों ने संज्ञानात्मक क्षमता को तथा 01 अध्यापक ने मार्गदर्शन को अकादमिक संकेतक के रूप में उत्तरदायी माना।

निजी माध्यमिक विद्यालय के 15 अध्यापकों ने शैक्षिक अभिरुचि को अकादमिक प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण माना। विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को 09 एवं व्यवहार को 08 अध्यापकों ने महत्वपूर्ण माना। 22 अध्यापकों ने अनुशासन को एवं 08 अध्यापकों ने शारीरिक क्षमता को, सकारात्मक क्षमता को सिर्फ़ 01 अध्यापक ने, जबकि 07 अध्यापकों ने संज्ञानात्मक क्षमता को एवं 03 अध्यापकों ने मार्गदर्शन को अच्छे अकादमिक प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण माना। परिणाम से ज्ञात हुआ कि निजी माध्यमिक विद्यालय के 01 अध्यापक ने अच्छे अकादमिक प्रदर्शन के लिए परीक्षाफल को महत्वपूर्ण कारक के रूप में बताया।

खराब अकादमिक प्रदर्शन की कमियाँ– अभिभावकों और अध्यापकों द्वारा दी गई प्रतिक्रिया—

अभिभावकों द्वारा

सरकारी माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के 22 अभिभावकों ने खराब अकादमिक प्रदर्शन के लिए शैक्षिक अभिरुचि में कमी को सबसे महत्वपूर्ण कारण बताया। इसके पश्चात् 14 अभिभावक उनकी पृष्ठभूमि में कमी को, 23 अभिभावकों ने व्यावहारिक अयोग्यता को, अनुशासनहीनता को 09, शारीरिक क्षमता में कमी को 06, सकारात्मक क्षमता में कमी को 05 एवं संज्ञानात्मक क्षमता में कमी को 06 अभिभावकों ने खराब अकादमिक प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण कारण के रूप में माना।

तालिका संख्या 4 – खराब अकादमिक प्रदर्शन की कमियाँ

कमियाँ	सरकारी		निजी	
	अभिभावक	*अध्यापक*	*अभिभावक*	*अध्यापक*
शैक्षिक अभिरुचि में कमी (पढ़ाई के प्रति लगाव में कमी, याद न करना, शिक्षा पर कम ध्यान)	22	22	24	25
पृष्ठभूमि में कमी (सुविधा न होना, आर्थिक स्थिति खराब)	14	12	05	15
व्यावहारिक अयोग्यता (बुरी संगति, झगड़ालू प्रवृत्ति, दूसरों के प्रति गलत विचार)	23	11	21	07
अनुशासनहीनता (विद्यालय न आना, आज्ञाकारी न होना, समय का दुरुपयोग)	09	18	22	14
शारीरिक क्षमता में कमी (शारीरिक अक्षमता, परिश्रम न करना, भाग्य में विश्वास)	06	21	20	06
सकारात्मक क्षमता में कमी (आत्मविश्वास की कमी, एकाग्रता की कमी, दृढ़ निश्चय की कमी)	05	09	04	01
संज्ञानात्मक क्षमता में कमी (कम बुद्धिलब्धि, कल्पना का अभाव)	06	07	01	5

निजी माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के 24 अभिभावकों ने खराब अकादमिक प्रदर्शन के लिए शैक्षिक अभिरुचि में कमी को कारण बताया। इसके पश्चात् 05 अभिभावकों ने उनकी पृष्ठभूमि में कमी को, 21 ने व्यवहार में कमी को, अनुशासनहीनता को 22, शारीरिक क्षमता में कमी को 20, सकारात्मक क्षमता में कमी को 04 एवं संज्ञानात्मक क्षमता में कमी को 01 अभिभावक ने खराब अकादमिक प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण कारण बताया।

अध्यापकों द्वारा

सरकारी माध्यमिक विद्यालय के 22 अध्यापकों ने खराब अकादमिक प्रदर्शन के लिए शैक्षिक अभिरुचि में कमी को सबसे महत्वपूर्ण कारण बताया। इसके पश्चात् 12 अध्यापकों ने विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि में कमी को, 11 ने व्यवहार में कमी को, अनुशासनहीनता को 18 अध्यापकों ने, शारीरिक क्षमता में कमी को 21, सकारात्मक क्षमता में कमी को 09 एवं संज्ञानात्मक क्षमता में कमी को 07 अध्यापकों ने महत्वपूर्ण कारण के रूप में माना।

निजी माध्यमिक विद्यालय के 25 अध्यापकों ने खराब अकादमिक प्रदर्शन के लिए शैक्षिक अभिरुचि में कमी जिसके अंतर्गत उन्होंने पढ़ाई न करना, शिक्षा पर कम ध्यान देना, विषय के प्रति अरुचि एवं लक्ष्य का निर्धारण न होना सबसे महत्वपूर्ण कारण

बताया। इसके पश्चात् 15 अध्यापकों ने उनकी पृष्ठभूमि में कमी को, 07 ने व्यवहार में कमी को, अनुशासनहीनता को 14 अध्यापकों ने, शारीरिक क्षमता में कमी को 06 ने, सकारात्मक क्षमता में कमी को 01 अध्यापक ने एवं संज्ञानात्मक क्षमता में कमी को 05 अध्यापकों ने खराब अकादमिक प्रदर्शन के लिए उत्तरदायी माना।

निष्कर्ष

माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों एवं अध्यापकों से उनके अकादमिक प्रदर्शन से संबंधित प्रश्नों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुए, जो इस प्रकार हैं—

सरकारी माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों ने 'शैक्षिक अभिरुचि' को प्रमुखता से 'अकादमिक संकेतक' तथा 'अच्छे अकादमिक प्रदर्शन की विशेषता' के रूप में बताया, जिसमें उन्होंने कहा कि यदि विद्यार्थियों में 'पढ़ाई के प्रति लगाव', 'जिज्ञासु प्रवृत्ति', 'विषय की जानकारी', 'पढ़ाई संबंधित क्रियाकलाप' करने की प्रवृत्ति विकसित हो जाए तो विद्यार्थियों का अकादमिक प्रदर्शन उच्च होगा। जबकि इन विद्यार्थियों के अध्यापकों का मानना है कि 'विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि' जिसके अंतर्गत 'पारिवारिक वातावरण', 'अभिभावक की शिक्षा', 'सही विद्यालय' इन सभी अकादमिक संकेतकों द्वारा ही विद्यार्थियों का स्वस्थ अकादमिक प्रदर्शन संभव होगा, वहीं निजी माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक एवं अध्यापक दोनों ही शैक्षिक अभिरुचि को अकादमिक संकेतक के रूप में महत्वपूर्ण मानते हैं।

निजी तथा सरकारी माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अध्यापकों ने तथा निजी माध्यमिक विद्यालय के अभिभावकों ने समान रूप से 'अनुशासन' को एक 'अच्छे अकादमिक प्रदर्शन की विशेषता' के रूप में प्रमुखता से माना। अध्यापकों ने इसके अंतर्गत 'नियमितता', 'अनुशासन' तथा 'समय का महत्व' को विद्यार्थियों के 'अकादमिक प्रदर्शन की विशेषता' के रूप में आवश्यक माना। Akiri and Ugborugbo (2009) ने अपने अध्ययन में बताया कि 'यदि शिक्षक प्रभावी हैं तो इससे विद्यार्थियों का अकादमिक प्रदर्शन अच्छा होगा।'

'खराब अकादमिक प्रदर्शन की कमियों' के लिए सरकारी माध्यमिक विद्यालय के अभिभावकों ने 'व्यावहारिक अयोग्यता' जिसमें 'बुरी संगति', 'झगड़ालू प्रवृत्ति' और 'दूसरों के प्रति गलत विचार' को ज़िम्मेदार माना। जबकि सरकारी माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों ने तथा निजी माध्यमिक विद्यालय के अभिभावकों एवं अध्यापकों ने भी 'शैक्षिक अभिरुचि में कमी' जिसके अंतर्गत 'पढ़ाई के प्रति लगाव में कमी', 'याद न करना' तथा 'शिक्षा में कम ध्यान' को विद्यार्थियों में खराब अकादमिक प्रदर्शन के लिए उत्तरदायी माना है।

Chapter 2.indd 22 7/28/2017 2:33:41 PM

संदर्भ

अकीरी, ए.ए. और एन.एम. उग्बोरूग्बो. 2009. 'टीचर्स इफ़ेक्टिवनेस एंड स्टुडेंट्स अकेडमिक परफ़ोर्मेंस इन पब्लिक सेकेंडरी स्कूल्स इन डेल्टा स्टेट्स.' *नाइजीरिया स्ट्राइटिस ऑन होम एंड कम्युनिटी साइंस*. 3(2), 107–113.

एन.सी.ई.आर.टी. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005*. नयी दिल्ली.

एन.सी.टी.ई. 2009. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फ़ॉर टीचर एजुकेशन – टुवार्ड्स ए ह्यूमेन एंड प्रोफ़ेशनल टीचर*. नयी दिल्ली.

किमानी, जी. एन., ए. एम. कारा और एल.डब्ल्यू. न्जागी. 2013. 'टीचर्स फ़ेक्टर इनफ़्लूएनसिंग स्टुडेंट्स अकेडमिक एचीवमेंट इन सेकेंडरी स्कूल्स इन न्यानदरूआ काउंटी, केन्या.' *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड रिसर्च*. 1(3), 1–14.

हिल, एन. ई. और एस. ए. क्राफ़्ट. 2003. 'पेरेंट स्कूल इनवोल्वमेंट एंड स्कूल परफ़ोर्मेंस–मीडिएटेड पाथवेयज़ अमंग सोशियो-इकोनामिकली कम्पेरेबल अफ़्रीकन-अमेरीकन एंड यूरो-अमेरीकन फ़ैमलीज़.' *जर्नल ऑफ़ एजुकेशन साइकोलोजी*. 96: 74–63

स्टीफ़न, एल.जे. और एल. शेबेन. 2002. 'द इफ़ेक्ट ऑफ़ इंटरस्कोलास्टिक स्पोर्ट्स पार्टिसिपेशन एजीवमेंट ऑफ़ मिडल लेवल स्कूल एक्टीविटीज़ (इलेक्ट्रॉनिक वर्जन). *नेशनल एसोसिएशन ऑफ़ सेकेंडरी स्कूल प्रिंसिपल्स बुलेटिन*. 86: 34–42.